

LAC एवं चीन

यह एडिटरियल 14/06/2022 को 'हदुस्तान टाइम्स' में प्रकाशित "Tackling China's infra build-up along LAC" लेख पर आधारित है। इसमें LAC पर चीन द्वारा आधारभूत संरचनाओं के वसितार और कसि चीनी आक्रमण के प्रतिरोध हेतु भारत द्वारा उठाये जा सकने वाले कदमों के बारे में चर्चा की गई है।

संदर्भ

आक्रामक चीन के उदय और भारतीय सीमा क्षेत्र के नकित उसके द्वारा आधारभूत संरचनाओं के वसितार के परदृश्य में भारत के लिये आवश्यक है कविह भी अपनी अवसंरचनात्मक क्षमताओं का वसितार करे ताकि [वास्तविक नयितरण रेखा](#) (LAC) पर चीन के कसि भी दुस्साहस के वरिद्ध एक प्रतिरोध या नवारक क्षमता (Deterrence) का नरिमाण हो। इसके साथ ही भारत को चीन को नयितरति रख सकने के लिये अपनी दीर्घकालिक रणनीति का विकास करना होगा।

मुद्दा क्या है?

- चीन LAC के नकित संवेदनशील क्षेत्र में आधारभूत संरचनाओं का नरिमाण और वसितार कर रहा है। नवीनतम उपग्रह से प्राप्त नवीनतम छवियों से पता चला है क चीन [पैंगों त्सो झील](#) पर अब एक दूसरे सेतु/पुल का नरिमाण कर रहा है। यह सेतु झील के उत्तरी और दक्षिणी किनारों के बीच टैकों के आवागमन और सैन्य बलों की तेज़ आवाजाही को सुगम बना सकता है।

चीन कसि तरह की अवसंरचना का नरिमाण कर रहा है?

- **वायु अवसंरचना में सुधार हेतु नरिमाण:** पहले प्रकार के क्षेत्र में PLAAF (चीनी वायु सेना) की क्षमताओं में वृद्धि पर ध्यान केंद्रित किया गया है, क्योंकि अब तक तबित पठार क्षेत्र में उसके पास सीमिति संख्या में ही परिचालित हवाई अड्डे रहे थे और चीनी वायु सेना हाई अल्टीटयुड अभियानों में गंभीर अक्षमता का सामना कर रही थी।
 - वर्ष 2017 में डोकलाम की घटना के बाद से चीन द्वारा तबित और शनिजियांग में 37 एयरपोर्ट एवं हेलीपोर्ट का नवनरिमाण या उन्नयन किया गया है, जिनमें से कम से कम 22 का सैन्य या द्वैध उपयोग किया जा सकता है।
 - द्वैध उपयोग सुविधाएँ वे अवसंरचनाएँ हैं जिनका सैन्य और नागरिक दोनों ही उपयोग किया जा सकता है। इन सुविधाओं में शामिल हैं:
 - सैन्य वमिनॉ की पार्कगि के लिये पक्के आश्रय,
 - उत्तरजीविति सुनश्चिति करने के लिये भूमगित अवसंरचनाएँ,
 - सुरक्षा के लिये वायु रक्षा मसिाइलें,
 - रनवे वसितार,
 - हेलीकॉप्टर संचालन सुविधाएँ।
- **लॉजिस्टिक्स बढ़ाने हेतु नरिमाण:** दूसरा क्षेत्र PLA द्वारा अपने मुख्य भूमि अड्डों से युद्ध स्थालों तक बेहतर सड़क एवं रेल नेटवर्क के माध्यम से अपनी सेना को तेज़ी से भेज सकने की क्षमता पर केंद्रित है।
 - वर्ष 2015 और 2020 के बीच तबित राजमार्ग की लंबाई 7,840 कमी से बढ़कर 11,820 कमी हो गई जो 51% वृद्धि दर्ज करती है।
 - जून 2021 में लहासा और न्यगिची के बीच एक हाई-स्पीड रेल लाइन की शुरुआत हुई जो 5 घंटे में 435 कमी की दूरी तय करना सक्षम करेगी।
- **'फॉरवर्ड मूवमेंट' को तेज़ करने हेतु नरिमाण:** LAC पर तीव्रता से युद्धक शक्ति का अनुप्रयोग कर सकने के लिये भी अवसंरचना वकिसति की जा रही है।
 - चीन ने G219 राजमार्ग से LAC की ओर कम से कम आठ प्रमुख सड़कों का नरिमाण किया है। ये सड़कें लद्दाख, दौलत बेग ओल्डी से गलवान घाटी, पैंगों त्सो और चुमार तक महत्त्वपूर्ण भारतीय सैन्य चौकियों के सामने के क्षेत्र तक संपर्क सुविधा प्रदान करती हैं। इसके अलावा, पैंगों त्सो में सेतु जैसी अवसंरचना सैन्य बलों की तीव्र उत्तर-दक्षिण आवाजाही में मदद करेगी।

चीन की मंशा क्या है?

- चीन के अवसंरचना विकास का उद्देश्य LAC पर संघर्ष के दौरान वायु शक्ति की तैनाती में भारत की लाभ की स्थिति को कम करना है।

- यह LAC पर अपनी सैन्य क्षमताओं की कमी को दूर करने, तबिबत में भारतीय वायु शक्ति की लाभ की स्थितिको बेअसर करने और PLA की युद्ध क्षमता को बढ़ाने पर लक्ष्य है।

भारत के लिये क्या चुनौतियाँ हैं?

- यह LAC पर युद्ध के लिये PLA की सैन्य क्षमता को बढ़ाएगा।
- तबिबत और शनिजियांग में बेहतर बुनयादी ढाँचे के साथ चीन अपने सैन्य ठिकानों से सीमा तक अपने सैनिकों को शीघ्रता से से जुटा सकता है।
- चीन तबिबत पर भारत की वायु शक्ति की बढ़त को बेअसर करने में भी सक्षम होगा।

भारत की ओर से क्या प्रतिक्रिया दी गई है?

- भारतीय सेना ने सैन्य बलों की एक बड़ी संख्या को पाकस्तान सीमा हटाकर उत्तरी मोर्चे पर फरि से तैनात कर दिया है।
- आधारभूत संरचना के विकास, नगिरानी में सुधार और सड़कों के नरिमाण पर प्रमुखता से बल दिया गया है।
- पूर्वी लद्दाख में वर्ष 2020 के गतरिध के बाद सरकार ने LAC के कनारे 32 सड़कों के नरिमाण को मंजूरी दी है।

आगे की राह

- **प्रतरिधक क्षमता का नरिमाण करना:** भारत को एक ऐसी रणनीत विकिसति करनी चाहिये जो उसकी प्रतरिधक स्थितिको सुदृढ़ करे।
 - यह प्रतरिधक क्षमता LAC पर बड़ी संख्या में सैन्य बलों तैनाती पर आधारित होगी।
 - भारत को उन क्षमताओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये जो संघर्ष की स्थिति में दंडात्मक लागत के आरोपण के रूप में प्रतरिध का नरिमाण कर सकती हैं।
- **सामरिक दृष्टिकोण:** बुनयादी ढाँचे के विकास और सैन्य बलों की तैनाती जैसे आवश्यक उपाय करने के साथ ही भारत को एक दीर्घकालिक सैन्य रणनीतिको विकिसति करने की आवश्यकता है।
- **IAF और नौसेना की श्रेष्ठ भूमिका:** हाई-अलटीटयुड अभियानों में भारतीय वायु सेना की परचालन तत्परता और प्रमुख भूमिका सुनश्चिति करने की आवश्यकता है क्योंकि चीन के पास इस भूभाग में कई 'फॉरवर्ड बेस' मौजूद हैं और इसके अलावा, तबिबत के पठार की चरम जलवायु परविहन और सैनिकों की लामबंदी को अत्यंत कठनि बनाती है।
 - भारत को हदि महासागर में भी एक प्रमुख नौसैन्य स्थितिको विकिसति करने की आवश्यकता है।
- **पारंपरिक साधनों से परे जाना:** लंबी दूरी की मसिइलों, साइबर युद्ध, अंतरकिष हथियारों आदि के माध्यम से युद्ध छेड़ने की कीमत को संघर्ष के निकटस्थ क्षेत्र से परे ले जाने के लिये सभी क्षेत्रों में क्षमताओं का विकास कयिा जाना चाहिये ताकि एक प्रतरिधक संतुलन बना रहे।

अभ्यास प्रश्न: भारत और चीन के बीच वविद के वषिय क्या हैं और चीन द्वारा कसिी कार्रवाई का मुकाबला कर सकने के लिये भारत कौन-से कदम उठा सकता है?